Dr. Madan Paswan, History. | Lecture No. 05

Class : B.A. Part-I (Hons.) P-I st. | Date : 04.11.2020

Topic : प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार.

Continue Lecture no. 04...

वे अध्यात्मवाद या अपनी एक अलग दुनिया में इतने तल्लीन थे कि उन्हें इस दुनिया की समस्याओं से कोई सरोकार ही नहीं था। पश्चिमी विद्वानों ने जोर देकर कहा कि भारतीयों ने न तो राष्ट्रवाद को अनुभव किया था और न ही किसी तरह के स्व-शासन को।

ऐसे कई सामान्यीकरण विंसेंट आर्थर स्मिथ (1843-1920 ई०) द्वारा लिखित भारत का प्राचीन इतिहास (Early History of India) में भी किए गए थे, जिसमें सन् 1904 में प्राचीन भारत का पहला क्रमान्वित इतिहास लिखा था। जो स्रोत उस वक्त उपलब्ध थे, उनके गहन अध्ययन पर आधारित और लिखित उनकी पुस्तक में राजनीतिक इतिहास को प्राथमिकता दी गई थी।

लगभग 50 वर्षों तक इसका इस्तेमाल पाठ्यपुस्तक के रूप में होता रहा और इसे विद्वानों द्वारा आज भी इस्तेमाल किया जाता है। स्मिथ (Smith) का ऐतिहासिक दृष्टिकोण साम्राज्यवादी था।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वफादार सदस्य के तौर पर उन्होंने प्राचीन भारत में विदेशियों की भूमिका पर जोर दिया। उनकी पुस्तक के एक-तिहाई भाग में सिकंदर के आक्रमण की चर्चा है। उसमें भारत को ऐसे अनियन्त्रित या स्वेच्छाचारी भूभाग के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ British शासन की स्थापना के पहले राजनीतिक एकता को अनुभव नहीं किया गया था।

उनका आंकलन यह है कि भारत में एकतंत्र या तानाशाही ही एकमात्र शासन का रूप रहा, भारत के इतिहासकार भी ऐसा ही मानते हैं।

सारांशतः भारतीय इतिहास की ब्रिटिश व्याख्या ने भारतीय चरित्र और उपलब्धियों को कमतर दिखाते हुए औपनिवेशिक शासन पद्धति को उचित ठहराया।

इनमें से कुछ विचारों को एक हद तक वैधता भी मिली। चीनियों की तुलना में भारतीयों में कालक्रम को लेकर कोई विशेष बोध और अभिरुचि नहीं दिखाई पड़ती, हालाँकि कुछ प्राचीनतर चरण में महत्वपूर्ण घटनाओं को गौतम बुद्ध की मृत्यु के संदर्भ में क्रमानुसार निर्धारित किया गया।

Conti...

औपनिवेशिक इतिहासकारों द्वारा निर्मित मान्यताएं कुल मिलाकर या तो निराधार थीं या अतिशयोक्ति से ग्रसित। फिर भी इनका इस्तेमाल निरंकुश British शासन के विस्तार की प्रचार सामग्री के रूप में हुआ।

Continue...